# परमेश्वर के नाम

INDIAN CHURCH OF CHRIST

प्राचीन समय में नाम आज की तुलना में अलग तरह से कार्य करते थे। एक व्यक्ति को उसके अलग-अलग नामों से पहचाने जाने के अलावा यह समझा जाता था कि नाम उस व्यक्ति के विषेश स्वभाव और चरित्र को प्रकट करता था। परमेश्वर का नाम जानना; उस व्यक्ति को परमेश्वर के पास जाने का एक विषेशाधिकार दिलाता था। एक बार जब उसके लोग उसका नाम जान जाते तो वे अपनी सुरक्षा और मदद के लिए परमेश्वर को पुकार कर सकते थे।

कुछ विषेश लोगों के साथ अपने नाम को जोड़ने से परमेश्वर के लिये इस जोखिम की संभावना भी होती कि लोग परमेश्वर के स्वभाव के विपरित व्यवहार करके उनका नाम बदनाम कर सकते थे।

हमारी प्रार्थना यह है कि आप इस शांत समय पुस्तिका का उपयोग वचनों के द्वारा परमेश्वर और यीशु को उनके ताज़ातरीन नामों और उपाधियों को जानने का अनुभव प्राप्त करें और साथ ही साथ यह जान सकें कि  पवित्र शास्त्र और संसकृती के किन संदर्भों में इनका खुलासा किया गया है।

इस पुस्तिका का संपादन **अॅन स्पेंग्लर** द्वारा लिखित पुस्तक **'परमेश्वर के नाम'** से किया गया है और यह केवल कलिसीया के आन्तरिक लोगों के लिये है।

# इलोहिम (इ-लो-हिम) परमेश्वर, शक्तिशाली निर्माणकर्त्ता
## दिन 1

**वाचन : उत्पत्ति 1**

पवित्र शास्त्र का पहला वाक्य उत्पत्ति १:१ में जहां परमेश्वर यह शब्द आता है उसका इब्री शब्द है **इलोहिम** (इ-लो-हिम)।

इलोहिम (इ-लो-हिम) वह है जिसने इस सबकी शुरूआत की, सबकी रचना की।

इलोहिम सब देवताओं से श्रेष्ठ परमेश्वर है, जो सबसे ऊंचा है।

यीशु ने क्रूस पर अपनी कष्टदायी प्रार्थना में इस नाम का उपयोग किया "एली, एली, लमा शबक्तनी"---अर्थात् 'हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?' **मत्ती 27:46**

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. परमेश्वर ने आपको पृथ्वी पर प्रभुत्व और नेतृत्व प्रदान किया है। आपने सृष्टिकर्त्ता का सम्मान कैसे किया?

२. किस रीति से प्रतिदिन आप सृष्टि से लाभ पाते और आनन्द उठाते हैं?

३. क्योंकि परमेश्वर ने हमें अपने स्वरूप में बनाया है उन्होंने हमें रचनात्मक शक्ति भी प्रदान की है। आपके वो रचनात्मक वरदान कौनसे हैं?

४. परमेश्वर ने सबकुछ अच्छा बनाया उसमें आप भी शामिल हैं। यह सच्चाई आपके और संसार के प्रति आपके स्वभाव को क्या रूप देता है या कैसे बदलता है?

५. यदि आप निरन्तर इस जागरूक्ता में जिएंगे कि परमेश्वर ने आपको इस संसार में उनके स्वरूप को धारण करने के लिये बनाया है; तो आपका जीवन कैसा होगा?

# एलरोई (एल-रोई) परमेश्वर, जो मेरा देखनेहारा है
# दिन 2

**वाचन : उत्पत्ति 16:1-16**

सारै की मिस्त्री दासी हाजिरा जो अब्राम से गर्भवती हुई, और जब वह सारै को तुच्छ समझने लगी तब सारै ने उसे अपने पास से निकाल बाहर किया।

गर्भवती होने का पता चलते ही यदि हाजिरा यह याद रखती कि वो कौन है और उसकी जगह कहां है तो हाजिरा और उसका बेटा इश्माएल अच्छा प्रदर्शन कर पाते।

फिर भी सारै का उसके साथ बर्ताव कठोर लगा।

उसके इन कठिनाईयों के बीच हाजिरा ने सीखा कि एलरोई (एल-रोई) की नज़रें उस पर थी और उसके पास हाजिरा और उसके बेटे को आशिष देने की योजना थी।

हाजिरा का एलरोई वह है जो हमारे सर के बालों को गिन सकता है और जो हमारा भुत, वर्तमान और भविष्य को जानता है। जब आप एलरोई से प्रार्थना कर रहे हैं तो आप उससे प्रार्थना कर रहे हैं जो आपके बारे में सबकुछ जानता है।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. आपको क्या लगता है कि क्यों प्रभु के दूत ने प्रश्न करते हुए हाजिरा के साथ बातचीत शुरू की?

२. रेगिस्तान में एकदम अकेले रहते हुए हाजिरा को कैसा महसूस हुआ होगा? अपने जीवन में इस तरह की घटना का वर्णन करो जब आप इस तरह की भावनाओं से गुजरे हों।

३. हाजिरा को किस बात से साहस मिला कि वो फिर से लौटकर सारै के पास गई और उसका सामना किया?

४. सारै ने उसे एक बच्चे के द्वारा आशिष देने के परमेश्वर के प्रयास में गड़बड़ी कर दी। आपके उन गड़बड़ीवाले प्रयासों का वर्णन करो जिसने आपके जीवन में परमेश्वर के योजनाओं की जगह ली।

५. एलरोई के चौकस देखभाल का आपका अनुभव कैसा रहा?

# एल शदाई (एलशदा-ई) सर्वशक्तिमान परमेश्वर
## दिन 3

**वाचन : उत्पत्ति 17:1-8, 15-18**

अब्राम के सामने परमेश्वर ने अपने आपको एल शदाई (एलशाद-ई) के रूप में प्रकट किया और उसे उस अनन्तकाल की वाचा के बारे में बताया जो वो अब्राम और उसके वंशजों के साथ बांधने जा रहा था। एल शदाई का वास्तविक अनुवाद होगा, "परमेश्वर, जो एक पर्वत/चट्टान है"। परमेश्वर को भी उन पर्वतों की तरह देखा जाता है जो मजबूत और कभी न बदलनेवाले हैं। एल शदाई परमेश्वर का खुलासा ऐसे करता है कि वो न केवल सृष्टि का रचनाकार और संभालनेवाला है बल्कि वह एक ऐसा परमेश्वर है जो अपने लोगों के साथ पहल करता और अपनी वाचा को बनाए रखता है।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. आपको क्या लगता है कि परमेश्वर जब अब्राहम के साथ उसके और उसके वंशजों के साथ बांधी वाचा के बारे में बात कर रहा था तो क्यों परमेश्वर ने अब्राहम पर अपने आपको प्रकट किया?

२. परमेश्वर ने अब्राम और सारै के नाम बदल दिये। उनके नए नामों का क्या महत्व था? (**उतपत्ति 12:2-3 भी देखें**)

३. परमेश्वर ने जब अपने नाम का खुलासा अब्राहम के सामने किया तब अब्राहम की प्रतिक्रिया क्या थी?

४. अब्राहम से किये परमेश्वर के वादों की सूचि बनाओ।

५. आपकी समस्या में परमेश्वर की मदद के लिये क्या आपको बहुत इंतज़ार करना पड़ा? अपने अनुभव का वर्णन करो।

६. एल शदाई, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, यह नाम आपके लिये क्या मायने रखता है? परमेश्वर के सर्वशक्तिमान सामर्थ का काम आपने अपने जीवन में कैसे अनुभव किया?

# एल ओलाम(एल ओ -लाम) अनन्तकाल का परमेश्वर या सनातन परमेश्वर
# दिन 4

**वाचन : उत्पत्ति 21:22-34**

इब्री भाषा में ओलाम का अनुवाद है ; सनातन, अनन्तकालिक, चिरस्थायी, सदा या प्राचीन। यह समय या स्थान के अनुभव की परिपूर्णता को संदर्भ देता है।

एल ओलाम (एल ओ-लाम) अर्थात् "सनातन परमेश्वर" या "अनन्तकाल का परमेश्वर" जिसका सम्बन्ध परमेश्वर और उसके नियमों, प्रतिज्ञाओं, वाचा और राज्य से है।

एल ओलाम हमारा परमेश्वर है जिसका कोई आरंभ और अन्त नहीं; जिसके लिये एक दिन हजार वर्षों के समान और हजार वर्ष एक दिन के समान हैं। उसकी योजनाएं सदा की हैं। उसका प्रेम सदा के लिये रहता है।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. पलिश्तियों के सरदार अबीमेलेक के शब्द अब्राहम के प्रति परमेश्वर के विश्वासयोग्यता के स्वभाव के बारे में क्या कहते हैं?

२. आपके अनुसार अब्राहम और अबिमेलेक के बीच जब वाचा बांधी गई तब अब्राहम ने झाऊ का वृक्ष (लम्बे समय तक जीवित रहने वाला पेड़ जिसे भारी मात्रा में पानी की आवश्वक्ता होती है और हरएक पौदा पांच लाख से ज्यादा बीज उत्पन्न करता है) क्यों लगाया?

३. जब आप एल ओलाम - अनन्तकाल का परमेश्वर या सनातन परमेश्वर के बारे में सोचते हैं तो आपके दिमाग में कौनसे चित्र उभरते हैं?

४. परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के बारे में इन नामों का क्या मतलब हो सकता है?

# याहवे (याह -वे) प्रभु
## दिन 5

**वाचन : निर्गमन 3:1-20**

निर्गमन ३:१४ में परमेश्वर अपना परिचय याहवे "मैं जो हूं सो हूं" करके देते हैं।
परमेश्वर स्वअस्तित्ववान है परन्तु वह हमेशा अपने लोगों के बीच मौजूद रहते हैं। याहवे अकेला नहीं है लेकिन इतिहास में वह अपने लोगों से बातचीत करता है। याहवे वो नाम है जिसका करीबी सम्बन्ध इतिहास में उसके चुने हुए लोगों के छुटकारा देने के कामों से है। परमेश्वर ने जो किया है उसके कारण हम परमेश्वर को जानते हैं।
पुराने नियम में (एस्तर, सभोपदेशक और श्रेष्ठगीत को छोड़कर) याहवे 6800 बार पाया जाता है।
यह परमेश्वर का व्यक्तिगत पवित्र नाम होने के कारण यरूशलेम के मन्दिर में केवल याजक ऊंचे स्वर से इस नाम को पुकारते थे।
७० ईस्वी में मन्दिर के ढाने के बाद इस नाम का उच्चारण फिर कभी नहीं किया गया। पवित्र शास्त्र में जब कभी याहवे यह शब्द जहां भी आया तो उसकी जगह पर अदोनाई (प्रभु) इस शब्द का इस्तेमाल किया गया। अंग्रेजी पवित्र शास्त्र की आवृतियों में अदोनाई और याहवे का अनुवाद प्रभु शब्द से किया गया है।
जब भी आप याहवे से प्रार्थना करते हैं तो याद रखें कि यह वही परमेश्वर है जो पाप के अत्याचार से बचाने के लिये आपके पास ठीक उसी तरह आता है जैसा उसने अपने लोगों को मिस्र के अत्याचारी शासन से बचाया था।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. आपको क्या लगता है क्यों मूसा ने परमेश्वर से उनका नाम जानना चाहा?

२. इस अनुछेद में परमेश्वर ने अपने बारे में जिन-जिन बातों का खुलासा किया है उन बातों की एक सूचि बनाओ।

३. परमेश्वर के मन में उसके लोगों के लिये क्या है इसके बारे में यह अनुछेद क्या खुलासा करता है?

४. आपको क्या लगता है; परमेश्वर की ओर देखने से मूसा क्यों डर रहा था?

५. उस समय का वर्णन किजिये जब आपको परमेश्वर ने अपना कुछ काम करने के लिये बुलाया और मूसा की तरह आप आनाकानी करने लगे?

# अदोनाई (अ-दो-नाई) प्रभु, स्वामि
# दिन 6

**वाचन : निर्गमन 4:1-5, 10-15**

अदोनाई अर्थात् रिश्ता: परमेश्वर प्रभु है और हम उसके सेवक।

अदोनाई एक इब्री शब्द है जिसका अर्थ है, "प्रभु" एक मालिक, स्वामि या सबसे वरिष्ठ के समान जैसा हमेशा लोगों के लिये उपयोग किया जाता है। अदोन का बहुवचन है अदोनाई जो हमेशा परमेश्वर को स्वामि या प्रभु कहकर संबोधित करता है। जब अदोनाई और याहवे ये दोनों शब्द एक साथ आते हैं तो NIV इसका अनुवाद "सर्वशक्तिमान प्रभु" या "प्रभु परमेश्वर" इन शब्दों से करता है।

नए नियम में प्रभु के लिये शब्द है किरियोस।

जब हम अदोनाई से प्रार्थना करते हैं तो उनसे कहो कि, अपने जीवन के हर पहलू को आप उनके हाथों में सौंपना चाहते हो। प्रार्थना करो कि आप एक ऐसे सेवक बनें जो परमेश्वर की मर्जी को तुरन्त करने के लिये तैयार है। यीशु प्रभु और सेवक दोनों थे। अपने बाद के भूमिका से वो इस बात का उदाहरण देते हैं कि अदोनाई के साथ हमारा रिश्ता कैसा होना चाहिये।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. निर्गमन ४ में परमेश्वर की प्रभुता को कैसे दर्शाया गया है?

२. यदि मूसा प्रभु की आज्ञा मानता है तो मूसा की सोच के अनुसार उसके साथ क्या हो सकता था? परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने में आप किन बातों से डरते हो?

३. परमेश्वर को मूसा पर क्यों क्रोध आया?

४. ध्यान दो कि यहां मूसा परमेश्वर की आज्ञा मानने से इन्कार कर रहा था और साथ ही साथ वह उन्हें "प्रभु" कहकर बुला रहा था। क्या आपने कभी ऐसा किया है? किस कारण आप पीछे हटे?

५. हालांकि परमेश्वर मूसा से नाराज थे फिर भी किसी और को भेजने की मूसा की विनती का जवाब परमेश्वर ने कैसे दिया?

६. जब आपको परमेश्वर की आज्ञा मानने में असुरक्षिता और हिचकिचाहट महसूस हुइ तब क्या परमेश्वर ने किसी को आपके साथ भेजा? इस व्यक्ति ने आपकी मदद कैसे की उसका वर्णन करो।

# यावेह यीरेह (या-वेह यीरे-ह) प्रभु उपाय करेगा
# दिन 7

**वाचन : उत्पत्ति 22:1-14**

इब्री क्रिया(**verb**) रा'हा (जिस शब्द से यीरेह शब्द लिया गया है) का अर्थ है "देखना"। यहां पर इसका अनुवाद "उपाय करेगा" ऐसा किया गया है। क्योंकि परमेश्वर भुत, भविष्य और वर्तमान को देख सकते हैं, तो किस चीज़ की ज़रुरत है उसका पूर्वानुमान लगाने और उसे पूरा करने में सक्षम हैं।

अंग्रजी शब्द "प्रोविजन" लॅटीन भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ है, "पहले से जान लेना"

जब आप यावेह यीरेह से प्रार्थना करते हैं, तो आप उस परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं जो पहले से ही परिस्थिती को जानता है और आपकी ज़रूरत को पूरा करने में सक्षम है।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. यदि आप अब्राहम होते और तीन दिन की यात्रा करके मोरिय्याह देश में अपने इकलौते पुत्र की बली चढ़ाने जा रहे होते, तो आपके मन में कैसी बातें भरी होती?

२. आपको क्या लगता है अब्राहम ने अपने सेवकों से ऐसा क्यों कहा होगा कि वह और उसका पुत्र आराधना करके फिर उनके पास लौट आएंगे? (व.५)

३. आप क्या सोचते हो, परमेश्वर लोगों की परीक्षा क्यों लेता है?

४. वो सबसे कठीन त्याग कौनसा है जो परमेश्वर ने आपसे करने को कहा? आपकी प्रतिक्रिया क्या थी?

५. किस-किस तरह से परमेश्वर ने आपकी ज़रूरतों को पूरा किया है? पिछले सप्ताह, पीछले महिने, पिछले साल, अपनी पूरे जीवन के बारे में सोचिये।

# यावेह रोफेह (या-वेह रो-फेह) प्रभु जो चंगाई देता है
# दिन 8

**वाचन : निर्गमन 15:20-27**

इब्री शब्द "रोफेह" का अर्थ है "चंगाई", "इलाज", "बहाल", या "पूरी तरह तन्दुरूस्त कर देना"। मिस्र से निकलकर परमेश्वर के लोग कनान के लिये निकलने के तुरन्त बाद परमेश्वर ने यावेह रोफेह के रूप में अपने आपको उनपर प्रकट किया। सभी चंगाईयों का स्त्रोत परमेश्वर है।

हालांकि अक्सर इसका संदर्भ शारिरिक चंगाई होता है, परन्तु यह एक व्यक्ति को पूरी तरह चंगा करने का संदर्भ भी देता है। यावेह रोफेह शरीर, मन और आत्मा को चंगा करता है।

यावेह रोफेह पानी, ज़मीन और राष्ट्रों को भी चंगाई देता है। यावेह रोफेह पाप और धर्मत्याग को भी चंगा करता है।

आप जब यावेह रोफेह से प्रार्थना करें तो आपके मन को जांचने की मांग करना। आपके मन में क्या है यह जानने के लिये समय लो ताकि परमेश्वर आपको उन बातों को बता सकें। यदि वह आपका कोई पाप सामने लाता है तो उसके लिये उनसे क्षमा मांगो और फिर चंगाई के लिये प्रार्थना करो। नया नियम यीशु को एक महान चिकित्सक के रूप में प्रकट करता है, शरीर और आत्मा को चंगाई देने वाला, जिसके चमत्कार परमेश्वर के राज्य की ओर इशारा करते हैं।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. हालात या परिस्थितियां परमेश्वर के प्रति लोगों के स्वभाव पर कैसे असर डालते हैं? अपने जीवन के एक परिस्थिती का वर्णन करो जिसके कारण आपका विश्वास डगमगा गया।

२. यहां मूसा का उदाहरण हमें कठीन परिस्थितियों के प्रति किस प्रकार की प्रतिक्रिया करना सिखाता है ?

३. मारा का पानी कड़वा था और परमेश्वर ने उसे मीठा किया। आपके जीवन में कड़वाहट के वो कौनसे क्षेत्र हैं जिन्हें चंगाई पाने की आवश्यक्ता है या चंगाई पा चुके हैं?

४. इस्राएलियों को रोगमुक्त रखने की अपनी प्रतिज्ञा को निभाने का आधार परमेश्वर किस शर्त पर रखते हैं?

५. इस्राएलियों की तरह क्या आपने अपने जीवन में परमेश्वर की परीक्षा को महसूस किया है? वर्णन करो कि आपकी प्रतिक्रिया क्या थी?

६. चंगाई पाने की आपकी प्रार्थना का उत्तर परमेश्वर ने दिया इसका अनुभव आपको कैसे मिला?

# यावेह निस्सी (या-वेह निस्-सी) प्रभु मेरा ध्वज है
# दिन 9

**वाचन : निर्गमन 17:8-16**

प्राचीन सेनाओं ने मानकों या झंण्डों का चलन लाया जो उनकी पहचान और चिन्हों के रूप में लोगों के आदर्शों को प्रकट करते थे। ध्वज या झंण्डा कुछ ऐसा था जिसे बहूत दूर से देखा जा सकता था, युध्द से पहले सैनिकों को एकत्रित होने के लिये एक बिन्दु का काम करता था।

क्योंकि यह ध्वज जिसने भी उसे उठाया उनके आदर्शों और आकांक्षाओं को दर्शाता जिसके कारण देश के प्रति, किसी मकसद या नेता के प्रति उनके समर्पण में और जोश भर जाता था।

अमालेकियों से युध्द के समय जब मूसा ने परमेश्वर की लाठी को अपने हाथों में पकड़ा, तो वो उसे एक ध्वज के समान पकड़े हुए परमेश्वर से उसकी शक्ति की गुहार लगा रहा है। एक वेदी बनाकर और उसका नाम यावेह निस्सी (या-वेह-निस्-सी), "प्रभु मेरा ध्वज है" रखकर, मूसा ने मिस्र को छोड़ने के बाद पहले युध्द के समय में परमेश्वर की सुरक्षा और सामर्थ के स्मरणार्थ एक स्मारक बनाया।

जब आप यावेह निस्सी से प्रार्थना कर रहे हैं तो आप उस परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं जो किसी भी शत्रु पर विजय पाने में सामर्थी है।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. वो कौनसे आत्मिकता के शत्रु हैं जिनसे आज आप लड़ रहे हैं?

२. आज हम आत्मिक युध्द में कैसे शामिल होते हैं? यदि मूसा की तरह आप भी यह कह पाएं कि "प्रभु मेरा ध्वज है" तो उससे क्या फर्क पड़ेगा?

३. जब लाठी पकड़कर मूसा अपना हाथ उठाए थक जाता तब हारून और हूर उसकी मदद करते थे। क्या कभी परमेश्वर ने युध्द के बीच में किसी और को आपकी मदद के लिये भेजा? किसे और कैसे?

४. अपनी खुद की ताकत से आप कौनसे युध्द लड़ने का प्रयास कर रहे हैं?

५. यीशु हमारे लिये परमेश्वर की विजय का ध्वज कैसे हैं? मसीह के क्रूस को ऊंचा उठाने से आपको विजय कैसे प्राप्त होगा?

# ऐश ओकलाह (ऐश-ओ-कलाह), एल कानाह (एल कान्-नाह)
# भस्म करनेवाली आग, ईर्ष्यालु परमेश्वर
# दिन 10

**वाचन : निर्गमन 34:10-14; व्यवस्थाविवरण 4:23-24; 6:13-19**

जब पवित्र शास्त्र परमेश्वर को एक भस्म करनेवाली आग के रूप में चित्रित करता है ऐश ओकलाह, तो यह मनुष्यों और राष्ट्रों के पापों के खिलाफ परमेश्वर के दिव्य क्रोध से सम्बध है।

हालांकि परमेश्वर की ईर्ष्या मनुष्यों की ईर्ष्या के समान नहीं है, पवित्र शास्त्र इसकी तुलना उस पुरूष की भावनाओं के साथ करता है जिसकी पत्नी विश्वासयोग्य नहीं है।

परमेश्वर एक जलन/ईर्ष्या रखनेवाला परमेश्वर है एल कानाह, जो अविश्वास को नहीं सहता।

यीशु ने इसे ठीक इसी तरह बताया जब उन्होंने कहा, "मार्ग, सच्चाई और जीवन मैं ही हूं। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (**यूहन्ना 14:6**)

परमेश्वर एक भस्म करनेवाली आग है, वो उस हरएक चीज को भस्म कर देगा जो उनकी पवित्रता के विरूद्ध है। वह एक ईर्ष्या रखनेवाला परमेश्वर है जो हमसे पूरी तरह से प्रेम करता है, इसीलिये, हमारी ओर से पूरे हृदय से प्रतिक्रिया की अपेक्षा करता है।

यदि हम उससे प्रेम करेंगे तो हमारा अपना जोश हमें परमेश्वर की महिमा और आदर के प्रति ईर्ष्यालु बना देगा। प्रार्थना करो कि परमेश्वर आपको और आपके परिवार को परमेश्वर की पवित्रता को गहराई से समझने की समझ दे और उसके नाम को आदर और ऊंचा उठाने के लिये अधिक से अधिक इच्छा दे।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. निर्गमन के अनुछेद में परमेश्वर क्या प्रतिज्ञाएं देते हैं?

२. सभी तीनों अनुछेदों में परमेश्वर ने क्या आज्ञाएं दी हैं?

३. वह कौनसी चेतावनियां देता है?

४. परमेश्वर ने ऐसा क्यों कहा कि उनका नाम "ईर्ष्या" रखनेवला परमेश्वर है?

५. परमेश्वर का यह नाम आपके जीवन से कैसे मेल खाता है?

## याहवे शालोम (या-वेह शा-लोम), प्रभु शान्ति है
## दिन 11

**वाचन : न्यायियों 6**

शालोम का अर्थ शान्ति के भी परे है। इसका अर्थ है, "परिपूर्णता", "पूर्णता", "निर्दोषता", "सुरक्षा", या "कल्याण"। परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप में रहने से शान्ति मिलती है। मेल-मिलाप का फल है दूसरों के साथ मेल-मिलाप, समृद्धि, तन्दुरूस्ती, आनन्द, स्वस्थता, परिपूर्णता और खुशहाली।
शालोम, सलाम की तरह नमस्कार करने का सार्वजनिक शब्द है या इस्राएल में बिदाई के समय कहने का एक शब्द है। यह एक ऐसी आशा दिखाता है कि जिस व्यक्ति का आप स्वागत कर रहे हैं, हर तरह से वो खुशहाल, पूर्ण, आनन्दित, समृद्ध, स्वस्थ  हो, और अपने साथ और दूसरों के साथ मेल-मिलाप से रहे। शालोम, परमेश्वर का परमेश्वर के लोगों के साथ एक विश्वासयोग्य रिश्ते को दर्शाता है।
जब  आप याहवे शालोम से प्रार्थना कर रहे हो, तो आप सारे शान्ति के स्रोत से प्रार्थना कर रहे हो। और उसके बेटे को "शान्ति का राजकुमार" के नाम से बुलाया जाता है।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. परमेश्वर अपने लोगों के अविश्वास के साथ कैसे निपटता है, इसके बारे में यह अनुछेद क्या बताता है?

२. आपके अनुसार स्वर्गदूत ने गिदोन को "शूरवीर योद्धा" क्यों कहा?

३. गिदोन को ऐसा क्यों लगा कि वह एक अगुवा और योद्धा होने के लायक नहीं है?

४. जब आप **शान्ति** इस शब्द को सुनते हो तो आपके मन में क्या विचार आते हैं?

५. आप अपनी  शान्ति किस कारण से खो रहे हो? आपकी चिन्ताएं क्या हैं? क्या आप इतने व्यस्त हो गए हो कि प्रभु के पास जाने का समय भी आपके पास नहीं है? क्या आपने ऐसे समझौते किये हैं जिनके कारण आप अपना विश्वास खत्म हो चुका है?

## याहवे सेबाओथ (या-वेह से-बा-ओथ), सेनाओं का प्रभु
## दिन 12

**वाचन : 1 शमूएल 17:38-47**

यावेह सेबाओथ नाम है असीम शक्ति का। सेनाओं का प्रभु यह नाम जगत के प्रत्येक सांसारिक और आत्मिक शक्तियों पर परमेश्वर का राज्य है इस बात पर जोर देता है।

कई बार पवित्र शास्त्र बात करता है सेनाओं के प्रभु का जो करूब और साराप ; सूरज और चाँद, तारे और आकाश, नदियों और पहाड़ों, ओलो और बर्फ, पुरूष और स्त्री, जंगली और पालतु जानवरों के महान सेनाओं का नेतृत्व करता है; ये सभी परमेश्वर की आराधना करते हैं और कई बार उन्हें परमेश्वर की ओर से युद्ध करने के लिये बुलाया भी जाता है।

जब आप याहवे सेबाओथ से प्रार्थना करते हैं तो आप एक ऐसे परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं जो इतना वैभवपूर्ण है कि सारी सृष्टि उसके उद्देश्य को पूरा करती है।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. आपके अनुसार इस कहानी में राजा के कवच (युद्ध के वस्त्र) पहनकर युद्ध करने में दाऊद की असमर्थता पर इतना ज़ोर क्यों दिया गया है?

२. गोलियत के साथ युद्ध में दाऊद और गोलियत के रवैये में क्या फर्क था?

३. दाऊद को इतना आत्मविश्वास और आत्मिक जोश कहां से मिला?

४. आज आप ऐसा कौनसा काम कर सकते हैं जो भविष्य में आनेवाले युद्धों का सामना करने के लिये आपको महान विश्वास प्रदान कर सकता है?

## याहवे सुरी (या-वेह सु-री), प्रभु मेरी चट्टान है
## दिन 13

**वाचन : भजन संहिता 144:1-2, 7-10**

चट्टान जंगल/विराने में छाया, आश्रय, और सुरक्षा देते हैं, और इनका उपयोग वेदी, मन्दिर, घर और शहरपनाह बनाने के लिये किया जाता था। यह परमेश्वर के सदा रहने वाले विश्वासयोग्यता का एक सही चिन्ह है।

यावेह त्सुरी की आराधना करना अर्थात् हन्ना की महान प्रार्थना की गूंज है: "प्रभु के तुल्य कोई पवित्र(चट्टान) नहीं है" (**1शमूएल 2:2**)

जब आप अपने प्रभु अपने चट्टान से प्रार्थना कर रहे हैं, तो आप ऐसे परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं जिस पर हमेशा भरोसा किया जा सकता है। उसके उद्देश्य और योजनाएं पूरे इतिहास में दृढ़ रहते हैं। नया नियम यीशु को आत्मिक चट्टान के रूप में पहचानता है जो इस्राएलियों की रेगिस्तान के लम्बे सफर में उनके साथ था।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. दाऊद ने अपनी कमज़ोरी/दीनता की भावना को सजीव छवियों के द्वारा बताया। अपने जीवन के एक ऐसे समय का वर्णन करो जब आप विशेष रूप से खुद को बहुत ही कमज़ोर/लाचार समझ रहे थे; तब आपने क्या किया?

२. आपके मदद की पुकार को परमेश्वर ने कैसे सुना?

३. आप जानते है कि परमेश्वर आपका बचानेवाला और छुड़ानेवाला है, यह जानकारी उन लोगों के प्रति जो आपका विरोध कर रहे हैं, उनसे अपनी प्रतिरक्षा और उनसे बदला लेने के आपके स्वभाव पर कैसे प्रभाव डालेगा?

४. जैसा दाऊद ने विश्वास किया कि परमेश्वर मेरी चट्टान है वैसा ही विश्वास यदि आपका भी होगा तो आपका जीवन किन मायनों में अलग होगा?

## याहवे रोई (या-वेह रो-ई), प्रभु मेरा चरवाहा है
## दिन 14

**वाचन : भजन संहिता 23**

अपनी आजीविका को बनाए रखने के लिये, चरवाहों के लिये यह ज़रूरी था कि वह अपने जानवरों को भटकने न दें, चोरों और जंगली जानवरों से उनकी रक्षा करें, और उनके लिये भरपूर चरागाहों का बन्दोबस्त करें।

इस्राएल में अन्ततः "चरवाहा" यह शब्द राजाओं के लिये रूपक बन गया। इस्राएल के अधिकांश कुलपति चरवाहे थे - हाबिल, अब्राहम, इसहाक, याकूब, मूसा और दाऊद।

हालांकि इस्राएल के अगुवों को भी चरवाहा कहकर बुलाया जाता था, परमेश्वर के झुंड की देखभाल करने में वो असफल होते इसलिये अक्सर उन्हें डांट पड़ती।

उस समय और आज दोनों समय में यावेह रोई अपने लोगों का एक सच्चा चरवाहा है। नया नियम यीशु को एक अच्छा चरवाहा कहकर बात करता है।

जब आप अपने प्रभु आपके चरवाहे से प्रार्थना करते हो, तो आप उससे प्रार्थना कर रहे हो जो रात-दिन आपका ध्यान रखते हुए, आपको खिलाते और आपका नेतृत्व करते हुए आपको सुरक्षित रूप से धार्मिकता के मार्ग पर ले जाता है।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. भजन संहिता **23** फिर से पढ़ो, और अब अपनी आंखें बन्द करो। कल्पना करो कि आप भेड़ हो। आप क्या देखते हो? आप क्या महसूस करते हो?

२. "वह मेरे जी में जी लाता है" इसका अर्थ क्या है? उस समय का वर्णन करो जब आपको इस तरह जी में जी लाने की आवश्वक्ता महसूस हुई।

३. अच्छे चरवाहे की लाठी और छड़ी ने कैसे आपकी सुरक्षा की, आराम दिया, मार्गदर्शन या सही क्या है बताया?

४. भजन संहिता में मेज की छवि आपको कल्पना करने और उसे पाने की आशा करने में क्या मदद करता है?

५. यदि आप सच में यह विश्वास करें कि भलाई और करूणा जीवन भर आपके साथ-साथ बनीं रहेंगी, तो आपके प्रतिदिन के जीवन में क्या बदलाव आएगा?

## हाशेम (हा-शेम), नाम
## दिन 15

**वाचन : 1 राजा 8:22 - 9:3**

"नाम" का इब्री शब्द है शेम। सुलैमान ने यह बिनती की कि, यरूशलेम के मन्दिर में परमेश्वर का नाम वास करे - वो जगह जहां उसके लोग प्रार्थना करें और उनकी सुनी जाए।

परमेश्वर के नाम को पुकारना अर्थात् उसकी उपस्थिती को पुकारना। उसके नाम में काम करना अर्थात् उसके अधिकार के साथ काम करना।

हालांकि परमेश्वर का नाम पवित्र और शक्तिशाली है, इसका उपयोग जादू के नुसखे के रूप में नहीं किया जा सकता। जो स्त्रि - पुरूष परमेश्वर में विश्वास करते हैं जब वो परमेश्वर का नाम लेते हैं तब वह शक्तिशाली हो जाता है।

**मत्ती 6:9** में यीशु ने हमें ऐसे प्रार्थना करना सिखाया, "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है। तेरा नाम पवित्र माना जाए..."

यीशु ने यह वादा किया कि जो भी हम उसके नाम से मांगेंगे वह हमें मिलेगा। **फिलिप्पियों 2:9-10** इस बात की पुष्टि करता है परमेश्वर ने यीशु को अत्यन्त महान किया और उनको वह नाम दिया जो "सब नामों में श्रेष्ठ है"।

जब हम हाशेम से प्रार्थना करते हैं, तो हम पवित्र परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं जो हमारी प्रार्थनाओं को सुनते और उनका उत्तर देते हुए हमारे बीच में वास करते हैं।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. परमेश्वर के नाम को कबूल करने का अर्थ क्या है?

२. यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर की प्रतिष्ठा के समय की सुलैमान की प्रार्थना आज आपके प्रार्थना के बारे में क्या बताता है?

३. जब परमेश्वर अपना "नाम" मन्दिर में रखने की बात करते हैं; तो वास्तव में परमेश्वर क्या कहना चाहते हैं?

४. तुम्हार शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है (**1**कुरिन्थियों **6:19**)। हाशेम आपके भीतर वास करता है। आप उनके पास अपनी कौनसी ज़रूरत ले जाना चाहते हैं?

## मेलेक (मे-लेक), राजा
## दिन 16

**वाचन : भजन संहिता 72:1 -8, 11-15**

इस्राएली यह विश्वास करते थे कि यांहवे मेलेक (राजा) था--- सिर्फ इस्राएल का नहीं पर पृथ्वी पर के हरएक राष्ट्र का। नया नियम यीशु को राजाओं का राजा कहकर प्रस्तुत करता है।

आस-पास के राष्ट्रों की तुलना में इस्राएलियों के लिये उनका राजा यावेह था। जब उनपर राजा राज्य करने लगे तब उन्हें समझ आया कि राजा की जिम्मेदारी है कि वो परमेश्वर के नियमों के अनुसार उनपर राज्य करे। दाऊद एक ऐसा राजा था।

लेकिन बहूत से राजा इस आदर्श पर न चल सके। परमेश्वर के लोग लम्बे समय से एक मसीहा का इन्तज़ार कर रहे थे, जो दाऊद का वंशज होगा और परमेश्वर के समान उनपर राज्य करेगा।

जब आप याहवे मेलेक से प्रार्थना करते हैं तो, आप एक ऐसे परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं जो सारी पृथ्वी का ध्यान रखता है और एक दिन पूरी महिमा से शान्ति और धार्मिकता के अनन्त राज्य की शुरूआत करेगा।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. भजन संहिता **72** हालांकि यह सीधे-सीधे परमेश्वर को राजा कहकर नहीं बुलाता, पर हमारे स्वर्ग के राजा के मूल्यों को दर्शाता है। क्या हैं ये मूल्य?

२. आज के शासक और नेता यदि भजन संहिता **72** में लिखे मूल्यों के अनुसार राज्य करते तो संसार कैसा होता?

३. इन मूल्यों की पूर्ती यीशु ने कैसी की?

४. कुछ समय लो और उन जगहों की सूचि बनाओ जहां सताव और हिंसा का राज्य चलता हो। तो विशेषकर उन जगहों पर परमेश्वर का राज्य आए और उनकी मर्जी वहां पूरी हो ऐसी प्रार्थना करो।

५. परमेश्वर के राज्य को इस संसार में आप किस तरह से फैला रहे हैं?

## एल चेय (एल-चेय), जीवित परमेश्वर
## दिन 17

**वाचन : 2 राजा 19:9 -19, 35-37**

एल चेय - जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया, वह मनुष्यों के हाथों से बनाए मूर्ती नहीं है वह एक जीवित परमेश्वर है। सिर्फ वो ही हमारे जीवन का स्रोत है।
पवित्र शास्त्र हमें झूठे देवताओं की आराधना न करने की चेतावनी देता है।
जो भी चीज हमारे जीवित परमेश्वर की जगह लेगा वह एल चेय में ईर्ष्या पैदा करेगा।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. **2** राजा **19** में हिजकिय्याह राजा की प्रार्थना "जीवित परमेश्वर" की उसकी समझ को कैसे दर्शाता है?

२. परमेश्वर को सम्मान देने की हमारी प्रार्थना के लिये हिजकिय्याह की प्रार्थना हमारे लिये एक आदर्श प्रार्थना कैसे बन सकता है?

३. एल चेय की आराधना करने के लिये वो ऐसे कौनसे झूठे देवता हैं जिनसे आपको दूर भागना है?

## माओन (मा-ओह्न), निवास स्थान, मॅकशे (मॅक-शे) शरणस्थान, मागैन (मा-गैन) ढाल, मेतसुदाह (मेत-सु-दाह) गढ़, मिग्दल-ओज़ (मिग-दल-ओज़) मजबूत गढ़, दिन 18

**वाचन : भजन संहिता 91:1 -16**

परमेश्वर के लिये ये वर्णनात्मक नाम भजन संहिता के साथ-साथ पवित्र शास्त्र के अन्य भागों में भी दिखाई देते हैं।

पुराना नियम ऐसे परमेश्वर को प्रकट करता है जो अपने लोगों के साथ रहता है। नया नियम ऐसे परमेश्वर को प्रकट करता है जो सिर्फ हमारे साथ रहता ही नहीं परन्तु हमारे भीतर निवास करता है। कभी-कभी परमेश्वर को हमारा निवास स्थान- माओन के रूप में चित्रित करके यह कल्पना पलट दी जाती है। परमेश्वर जो मॅकशे - शरणस्थान हैं उनके पास हम हमारी कुशलता और सुरक्षा के लिये दौड़ सकते हैं।

मागैन - ढाल - परमेश्वर के सुरक्षात्मक देखभाल के रूप को प्रकट करता है।

परमेश्वर की तुलना मेदसुदाह - गढ़ और मिग्दल-ओज़ - मजबूत गढ़ से करता है जो अन्य जगहों पर हमारे लिये परमेश्वर की सुरक्षा और मजबूत गढ़ का संकेत देता है।

जब आप अपने परमेश्वर, शरणस्थान, ढाल, गढ़, निवास स्थान और मजबूत गढ़ से प्रार्थना कर रहे हो तो, आप उस परमेश्वर को आवाहन कर रहे हो जिसने आपकी देखभाल करने और सुरक्षित रखने का वादा किया है।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. जो परमेश्वर को अपना शरणस्थान मान लेता है उस व्यक्ति की विशेषता क्या है?

२. यदि आप "परमेश्वर के पंखों" के नीचे शरण ले पाते तो आपका जीवन किन मायनों में अलग होता?

३. परमेश्वर में शरण लेने का अर्थ क्या है? इस शरण का आपका अनुभव कैसा है?

४. भजन संहिता **91** में किन खतरों की बात की गई है? भजन संहिता **91** में क्या-क्या वादे हैं?

५. किन बातों से आपको सबसे ज्यादा डर लगता है? आपके सभी डरों पर परमेश्वर के वादों को आप कैसे लागू कर सकते हो?

## एल इल्योन (एल इल-योन), परमप्रधान परमेश्वर
## दिन 19

**वाचन : दानिय्येल 4:19, 24 - 34**

जीवन के हर क्षेत्र में परमेश्वर सर्वोच्च हैं। वो सभी जो मसीह के हैं उनके अनुकरण के द्वारा परमप्रधान के बेटे और बेटियों के रूप में प्रकट किये जाते हैं।

एल इल्योन का उपयोग सबसे पहले मेल्कीसेदेह जो सालेम का राजा था के संदर्भ में किया गया, जिसे "परमप्रधान परमेश्वर का याजक" कहा जाता था (**उत्पत्ति 14:18-20**)। दानिय्येल के इस अनुछेद में राजा नबूकदनेस्सर के सपने का अर्थ यह बताता है कि जब मनुष्य यह भूल जाता है कि स्वर्ग और पृथ्वी में परमप्रधान कौन है तो क्या होता है।

जब आप एल इल्योन की प्रशंसा करते हो तो, आप उसकी आराधना करते हो जिसकी शक्ति, दया और सर्वशक्तिमानता की तुलना किसी से नहीं की जा सकती।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. नबुकदनेस्सर को इतनी समृद्धि और महानता कहां से प्राप्त हुई थी?

२. नबुकदनेस्सर का घमण्ड उसके पागल होने का कारण बना इसके बारे में आपकी क्या राय है?

३. यह कहानी पवित्रता और दीनता के बीच की कड़ी के बारे में क्या बताता है?

४. आपकी सफलता, आपके परिवार और आपकी धन-सम्पत्ति, जो परमेश्वर का आशिष है; उसका श्रेय आप खुद ले इसके प्रलोभन में आप कैसे गिरे?

५. परमेश्वर की महानता को मानने के लिये आप क्या कर सकते हैं? आज कुछ विशेष करो।

## याहवे शम्माह (या-वेह शम्-माह), प्रभु वहां है
## दिन 20

**वाचन : यहेजकेल 37:21-28, 48 : 35**

यावेह शम्माह परमेश्वर का नहीं परन्तु एक शहर का नाम है। लेकिन परमेश्वर की उपस्थिती और उनकी शक्ति से इसका संबन्ध इतना करीबी है कि अक्सर इसे परमेश्वर के नाम के बराबर समझा जाता है।

उत्पत्ति में परमेश्वर, पुरूष और स्त्री इन तीनों में एक सरल नज़दीकी है। पाप के आते ही यह नज़दीकी नष्ट हो जाती है। आदम और हव्वा ने छुपने का प्रयत्न किया। परमेश्वर उनको ढूंढते और उन्हे बाहर निकाल देते हैं। परमेश्वर फिर से मनुष्य से अपने रिश्ते को स्थापित करते हैं। वह इस्राएल का चुनाव करते और उन्हें दासत्व से छुड़ाते हैं फिर उनके साथ बादल और आग का खम्बा बनकर निवासस्थान में और बाद में यरूशलेम के मन्दिर में उनके साथ रहते हैं।

फिर भी परमेश्वर के लोग पाप में गिरते हैं। लोगों के लगातार अविश्वासीपन के कारण परमेश्वर की महिमा को यहेजकेल मन्दिर से निकलकर जाते हुए देखता है। अब परमेश्वर वहां नहीं हैं। यहेजकेल की किताब आशा की एक जबरदस्त विचार के साथ समाप्त होती है जहां उस समय से शहर का नाम होगा: **"प्रभु वहां है"**।

**"प्रभु वहां है"** हमें यह याद दिलाता है कि हमें इसलिये बनाया गया कि हम परमेश्वर की उपस्थिती का आनन्द उठाएं और उनकी उपस्थिती को प्रकट भी करें।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. परमेश्वर की उपस्थिती के चिन्ह क्या हैं?

२. परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना और उनकी उपस्थिती में रहना इन दोनों बातों में क्या सम्बन्ध है?

३. परमेश्वर की उपस्थिती आपमें, आपके परिवार में और आपके पारिवारिक गुट में है; इस बात का क्या सबूत है?

४. कुछ मिनीट यह कल्पना करते हुए बिताओ कि एक दिन भी परमेश्वर न हों तो क्या होगा।? सभी आशिषों की सूचि बनाओ जो परिणामस्वरूप आप से ले लिये जाएंगे।

## अब्बा (अब-बा), पातर (पा-तेर), पिता
## दिन 21

**वाचन : लूका 15:1-2, 11 : 32**

परमेश्वर को अपना पिता कहकर यीशु ने सताव को न्यौता दिया। उन्होंने अपने शिष्यों को परमेश्वर को पिता कहना सिखाया।

यीशु के कारण हम साहस के साथ परमेश्वर को अपना पिता कहकर बुला सकते हैं।

यीशु ने परमेश्वर को एक दयालु **पिता** के रूप में दर्शाया, जो पापी और स्वधर्मी दोनों पर अनुग्रह करते हैं।

लूका में यीशु के पहले शब्द जो लिखे गए जब वो अपने सांसारिक माता-पिता से बात करते हैं वो है, "क्या तुम नहीं जानते थे कि मुझे अपने **पिता** के भवन में रहना अवश्य है"।

"हे अब्बा, हे पिता" कहकर बुलाना नए नियम में तीन बार पाया जाता है, तीनों ही बार प्रार्थना में।

गतसमने में अपनी पीड़ादायक गिड़गिड़ाहट में यीशु ने इस शब्द का उपयोग किया, यीशु ने कहा, "हे अब्बा, हे पिता, तुझसे सबकुछ हो सकता है। इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले। तो भी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो"। **मरकुस 14 : 36**

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. यीशु यह दृष्टान्त किस को सुना रहे हैं? आज यह दृष्टान्त वो किसको सुना सकते हैं?

२. जिस तरह से गुमराह पुत्र पर उसके पिता ने अनुग्रह दिखाया; उस तरह का अनुग्रह परमेंश्वर ने आप पर किया इस बात का वर्णन करो।

३. इस कहानी में आप किस पुत्र के समान हैं? क्यों?

४. बड़े बेटे ने अपने पिता के इस स्पष्टिकरण का क्या जवाब दिया, इसके बारे में यीशु हमें नहीं बताते। इस कहानी को अन्त में अधूरा क्यों छोड़ा गया?

## इम्मानुएल (इम्-मा-नु-एल), इम्मानौएल (इम्-मा-नौ-एल), परमेश्वर हमारे साथ है
## दिन 22

**वाचन : मत्ती 1:18-23**

इम्मानुएल का अर्थ है - "हमारे साथ परमेश्वर है"। जब हमारे पापों ने परमेश्वर के पास हमारे आने को बिलकुल असंभव बना दिया, तो परमेश्वर ने हमारे पास आने का अपमानजनक कदम उठाया और खुद को दु:ख, प्रलोभन और पाप के लिये अति संवेदनशील बना लिया।

मत्ती का सुसमाचार **यशायाह 7:14** की भविष्यवाणी को याद दिलाता है। यह संकेत एक धर्मत्यागी राजा को कई साल पहले दिया गया था।

पवित्र शास्त्र कहानी है परमेश्वर के लोगों के साथ रहने के परमेश्वर की निरन्तर इच्छा की। यीशु इम्मानुएल- "परमेश्वर हमारे साथ है" है। वह हमें बचाने, छुटकारा दिलाने, और अपने रिश्ते को फिर से परमेश्वर के साथ स्थापित करने के लिये आया।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. यीशु का यह नाम यीशु के स्वभाव के बारे में क्या खुलासा करता है?

२. इम्मानुएल - परमेश्वर मेरे जीवन में है इस बात का अनुभव अब तक आपने कैसे लिया?

३. परमेश्वर सच में आपके साथ हैं इस बात पर विश्वास करने में आपको संघर्ष कब हुआ?

४. मत्ती का शुरूआत और अन्त परमेश्वर हमारे साथ है, इस वादे से होता है (**मत्ती 28:20**)। यदि आप प्रतिदिन अपने दिन की शुरूआत और अन्त इस विश्वास के साथ करेंगे कि परमेश्वर आपके साथ है, तो आपका जीवन कैसे अलग होगा?

## सार शालोम (सार-शा-लोम), शान्ति का राजकुमार
## दिन 23

**वाचन : यशायाह 9:2, 6-7, लूका 1:67, 76-79**

शान्ति के लिये इब्री शब्द का अर्थ झगड़ा ना होने या कठिनाई समाप्त होने से कहीं ज्यादा है। शालोम सम्पूर्णता और पूर्णता दर्शाता है।

शालोम का आनन्द उठाना याने स्वस्थता, खुशी, सफलता, कुशलता, खुशहाली और समृद्धि का आनन्द उठाना है।

इफिसी मसीहियों को पौलूस ने यह आश्वासान दिया कि, "यीशु ही हमारी शान्ति है" इफिसियों **2:14**। परमेश्वर के साथ शान्ति, दूसरों और खुद के साथ शान्ति पैदा करती है। जब मसीह का राज्य स्थापित होगा, तब सभी कलह समाप्त हो जाएंगे, और जो मसीह के हैं वे अनन्तकाल के लिये शान्ति की परिपूर्णता , स्वास्थ्य, सम्पूर्णता, खुशहाली, शान्ति, संतुष्टि, सुरक्षा, समृद्धि और परिपूर्ण सन्तुष्टता का आनन्द उठाएंगे। जब आप सार शालोम से प्रार्थना कर रहे हैं तो, आप खुद मसीह से प्रार्थना कर रहे हैं। शान्ति में रहना अर्थात् उसकी उपस्थिती में रहना।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१.आपके लिये शान्ति शब्द का अर्थ क्या है? पवित्र शास्त्र के शालोम के विचार से ये अलग कैसे है?

२. यीशु के द्वारा शान्ति का अन्तिम कार्य क्या था? यीशु कैसे हमारी शान्ति बन गया?

३. क्या आप अपने जीवन में शालोम अनुभव कर रहे हैं?

४. क्या आपके जीवन में ऐसे रिश्ते हैं जो झगड़े और कलह का कारण हैं? इन रिश्तों में आप शालोम को कैसे ला पाएंगे?

## क्रिस्तोस (क्रिस-तोस), माशिआच (मा-शी-आक)
## मसीहा
## दिन 24

**वाचन : प्रेरित 2:22-24,32-33, 36-38**

मसीहा और क्रिस्त का अर्थ है "अभिषिक्त" कोई एक जिसे विशेष कार्य के लिये चुना गया है।
इस्राएल का मसीहा होने के नाते वह सब राजाओं से महान था।
उसका कार्य था पाप और मृत्यु से सम्बध हमारी सभी परेशानियों का अन्त।
यीशु ने सार्वजनिक रूप में अपने पूरे जीवनभर मसीहा इस उपाधि का परहेज किया। अन्ततः अपनी मृत्यु से पहले उन्होंने महायाजक के प्रश्न का उत्तर दिया, "क्या तू परम धन्य का पुत्र मसीह है?" यीशु ने कहा, "हां मैं हूं"। (**मरकुस 14: 61-62**)
हम उस मसीहा से प्रार्थना करते हैं जो अपने प्रेम की शक्ति के द्वारा सारे संसार को और हमको बचाने के लिये फिर से परमेश्वर के पास बुला रहा है।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. यह कहना की यीशु अभिषिक्त थे या परमेश्वर की सेवा के लिये उन्हें चुना गया या अलग किया गया; इसका क्या अर्थ है?

२. जब हम बपतिस्मा लेते हैं तब कैसे अभिषिक्त होते हैं?

३. परमेश्वर ने किस मकसद के लिये हमारा अभिषेक किया है?

## लोगोस (लो-गोस), वचन
## दिन 25

**वाचन : यूहन्ना 1:1-3,10-14**

यूहन्ना का सुसमाचार आरंभ होता है यीशु को लोगोस-"वचन" के नाम से बुलाने से। यीशु से पहले जो भविष्यद्वक्ता हुए वे सिर्फ परमेश्वर के वचनों के बारे में बताते थे, परन्तु यीशु परमेश्वर के वचन थे और हैं। यीशु और परमेश्वर एक हैं। इसी कारण से यीशु अतुलनीय रूप से परमेश्वर के हृदय और मन की बात बताने में सक्षम थे।

हमारा भाग्य इस बात पर निर्भर होता है कि हम कितना ध्यान लगाकर सुनते हैं।

क्या हम विश्वास करेंगे, या फिर हम लोगोस की सुनकर अनसुनी कर देंगे?

हमें यीशु - लोगोस के प्रति विश्वास और दीनता का स्वभाव रखना है, ताकि हम यीशु के जीवन को पुन: उत्पन्न कर सकें और **वचन** हमारे शरीर का मांस बन जाए।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. उत्पत्ति **1:1-5** की तुलना यूहन्ना **1:1-5** से करो। आपके अनुसार यूहन्ना ने अपने सुसमाचार का आरंभ इस प्रकार क्यों किया?

२. "उनके नाम में विश्वास" करने का अर्थ क्या है?

३. पवित्र शास्त्र में कहे अनुसार, आप परमेश्वर के वचन के लिये कितने भूखे हो? आपके लिये वचनों की कीमत क्या है इसे आप कैसे बताओगे?

## येयसौस सोतैर (येय सौस-तैर), उद्धारकर्त्ता यीशु
## दिन 26

**वाचन : मत्ती 1:18-25**

पृथ्वी पर उनके पिता युसुफ को उनके पुत्र का नाम यीशु रखने के लिये परमेश्वर के स्वर्गदूत ने कहा। इब्री "येशुआ" के समतुल्य/ बराबर नाम है यीशु। यहोशुआ का संक्षिप्त शब्द "येशुआ" है जिसका अनुवाद अंग्रेजी बायबल में "यहोशू" है। यीशु और यहोशू दोनों का अर्थ है, "यावेह मददगार है" या "यावेह उद्धारकर्त्ता है"।

उद्धारकर्त्ता का यूनानी शब्द है सोतैर।

यीशु यावेह है जो पृथ्वी पर आए। यीशु परमेश्वर हैं जो हमारी ओर झुके। परमेश्वर हममें से एक हुए, परमेश्वर ने हमपर दया की, परमेश्वर ने खुद को दीन किया, परमेश्वर कब्र से जीवित हो उठे ताकि हमें अपने घर का मार्ग बता सकें।

"किसी दूसरे के द्वारा उद्धार संभव नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें"।(**प्रेरित 4:12**)

यीशु नाम सब नामों में श्रेष्ठ नाम, प्रीय उद्धारकर्त्ता, महिमावान प्रभु।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. आपके अनुसार यीशु इस नाम को परमेश्वर के वाचा के नाम यावेह से क्यों जोड़ा गया है?

२. उद्धार आपके लिये क्या मायने रखता है, वर्णन करो?

## कुरिओस (कु-री-ओस), प्रभु
## दिन 27

**वाचन : फिलिप्पियों 2:5-11**

कुरिओस शब्द का उपयोग नए नियम में एक मालिक, सम्राट, राजा, पति या स्वामि के लिये किया गया है। इसका अनुवाद इब्री भाषा में परमेश्वर के तीन नामों एलोहिम, यावेह और अदोनाई भी किया जा सकता है। शुरूआती समय में यीशु के कार्य/मिनिस्ट्री में उनको प्रभु याने शिक्षक या रब्बी या स्वामी इस नाम से संबोधित किया गया। परन्तु उनकी मृत्यु और पुनरूत्थान के बाद "प्रभु" इस नाम का उपयोग विश्वास की कबूली के लिये अधिक विशेष रूप में किया गया। याद है शक्की थोमा कहता है, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर"।(यूहन्ना **20:28**)

मसीहियत की सबसे पहली विश्वास की कबूली बहूत छोटी थी लेकिन शक्तिशाली थी - यीशु प्रभु है!

वो जो उससे प्रेम करते हैं और जो उसका विरोध करते हैं, दोनों ही एक दिन यीशु को "प्रभु" कहकर पुकारेंगे। जब आप प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे हो तो, याद रखो कि आप अपना जीवन, अपनी सबसे बुरी निराशाओं, आपके संघर्षों, आपके सपनों को उसके हाथों में सौंप रहे हो।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. यीशु की आज्ञाकारिता यहां तक कि क्रूस की मृत्यु भी सहने के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया क्या थी?

२. जब यह कहा गया कि, हर जीभ स्वीकार करगो कि यीशु प्रभु हैं, तो इसका अर्थ क्या है?

३. परमेश्वर की महानता की परिभाषा सामान्य लोकप्रिय परिभाषा से कैसे अलग है?

४. अपने जीवन में यीशु की प्रभुता का आपका अनुभव कैसा है?

## अल्फा काई ओमेगा (अल-फा-काई-ओह-मे-गाह), शुरूआत और अन्त
## दिन 28

**वाचन : यशायाह 48:12, प्रकाशितवाक्य 21:5-6, प्रकाशितवाक्य 22:12-13**

अल्फा और ओमेगा पहले और आखिरी युनानी अक्षर हैं।

प्रकाशितवाक्य **22:13** का रूपान्तर "मैं अ(**A**)और ज्ञ(**Z**), प्रथम और अन्तिम, शुरूआत और अन्त हूं।"

संसार की सृष्टि के समय यीशु उपस्थित थे और संसार के अन्त के समय भी यीशु उपस्थित रहेंगे, जब अन्ततः वो और उनके काम प्रकट होंगे।

जब आप मसीह को शुरूआत और अन्त कहकर प्रार्थना कर रहे हैं तो, आप उनसे प्रार्थना कर रहे हैं जो था, है और आनेवाला है। वो हमारे सर्वसम्पन्न प्रभु हैं, जो हमारे भीतर शुरू किये गए अच्छे काम को पूरा करने में कभी विफल नहीं होंगे।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. क्या एक मनुष्य अ(**A**)और ज्ञ(**Z**) होने का दावा कर सकता है? क्यों और क्यों नहीं?

२. आपके खुद के जीवन में यीशु पहले और आखिरी हैं यह कहने का अर्थ क्या होगा?

३. आपके जीवन को आपकी कहानी के रूप में देखने के बजाए यदि आप अपने जीवन को परमेश्वर की कहानी के एक भाग के रूप में देखेंगे तो क्या होगा? आप जिस तरह से अपना जीवन जीते और आपके जीवन के जो लक्ष्य हैं उनपर इस बात का क्या असर पड़ेगा?

४. हम उसी में जीवित रहते, चलते-फिरते और स्थिर रहते हैं (**प्रेरित 17:28**)। इसका अर्थ आपके लिये क्या है?

## पोईमेन कालोस (पोई-मेन-का-लोस), अच्छा चरवाहा
## दिन 29

**वाचन : यूहन्ना 10:1-18**

भेड़ों के झुण्ड को चरवाहा भोजन, सुरक्षा और मार्गदर्शन प्रदान करता है।

परमेश्वर के लोग भेड़ों का एक झुण्ड हैं, जो भटके हुए और निर्बुद्धि हैं, और अक्सर जंगली जानवरों और चोरों का शिकार बनते हैं।

परमेश्वर उनका चरवाहा बनने की प्रतिज्ञा करते हैं। यशायाह **40:11** में परमेश्वर एक दयालु चरवाहा है जो अपनी भेड़ों को अपने हृदय से लगाए रखता है।

यूहन्ना **10** इस बात का वर्णन करता है कि अपनी भेड़ो की सुरक्षा के लिये अच्छा चरवाहा किस हद्द तक जा सकता है। यीशु अपने भेड़ों को कभी नहीं छोड़ेगा; परन्तु अपनी जान देकर भी वह उनकी रक्षा करेगा।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. आपके अनुसार यीशु हमारे साथ अपने रिश्ते का वर्णन ; चरवाहे और भेड़ के रिश्ते के समान क्यों करते हैं?

२. यूहन्ना**10** के डरावने और सांत्वना देनेवाले चित्र कौनसे हैं? यह चित्र धार्मिक वास्तविकताओं को कैसे व्यक्त करते हैं?

३. आपके जीवन में कौन खोए हुए भेड़ के समान है जिसकी खोज परमेश्वर कर रहे हैं? इस व्यक्ति को इस झुण्ड में लाने के लिये आप क्या कर सकते हैं?

## बेसिलियस बेसिलिऑन (बे-सी-लीयस बे-सी-लि-ऑन), राजाओं का राजा
## दिन 30

**वाचन : मत्ति 21:1-9; प्रकाशितवाक्य 19:11-16**

हालांकि इस संसार में यीशु ने एक असहाय बच्चे के रूप में प्रवेश किया, फिर भी पूर्व से आनेवाले ज्योतिषियों ने पहचान लिया कि यीशु नए जन्मे राजा हैं।

जब विश्वासी उन्हें अपना राजा और प्रभु मानकर स्वीकार करते हैं तो आज मसीह का राज्य छिपे हुए तरीके से प्रकट होता है। लेकिन एक दिन जब यीशु वापस आएंगे तब उनका राज्य हरएक राज्यों से महानतम राज्य के रूप में प्रकट होगा।

प्रकाशितवाक्य **19** के अनुसार यीशु गदही पर सवार होकर नहीं आएंगे (**मत्ति 21**) लेकिन एक शानदार सफेद घोड़े पर, जो सभी राजाओं से महानतम राजा के लिये उपयुक्त है।

पूरे पवित्र शास्त्र में यीशु को, "राजा", "युगों का राजा", "यहूदियों का राजा", "इस्राएल का राजा", "राजाओं का राजा", कहकर बुलाया गया है - जिसका अर्थ यूनानी भाषा में बेसिलियस बेसिलिऑन है। आज भी कुछ मसीही कलीसिया की इमारतों का नाम "बेसिलिका" है - अर्थात् "राजा का भवन"।

जब आप राजाओं के राजा से प्रार्थना करते हैं तो, अपने मन में उनके इस प्रभुत्व को याद करो जो न केवल मनुष्यों पर, बल्कि सृष्टि, बीमारी और मृत्यु पर भी है।

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. परिपूर्ण/उत्तम राजा का वर्णन करनेवाले गुणों की सूचि बनाओ। अब आज के कुछ नेताओं से इसकी तुलना करें और विपरीतता देखें।

२. यीशु को अपने राजा के रूप में स्विकार करने का अर्थ क्या है? अब तक आपके जीवन में उनके शासन का आपका अनुभव कैसा है?

## इगो ऐमि (इ - गो ऐ-मि), मैं हूं
## दिन 31

**वाचन : निर्गमन 3:13-14;यूहन्ना 8:50-59**

जब पहली बार जंगल/रेगिस्तान में मूसा का सामना परमेश्वर से हुआ जिस नाम से परमेश्वर ने अपना परिचय दिया उसने परमेश्वर कौन हैं इसका रहस्य और बढ़ गया - "मैं जो हूं सो हूं।" "मैं जो हूं सो हूं।" यह नाम इब्री के 4 समस्वरों से बहुत करीबी सम्बन्ध है, जिसको एकसाथ जोड़ने से पुराने नियम में परमेश्वर के वाचा का नाम याहवे बनता है।

परमेश्वर का अस्तित्व हमेशा से था और वो हमेशा अपने लोगों के साथ रहते हैं। जब धर्मगुरू यीशु पर हमला कर रहे थे, तब यीशु ने अपनी पहचान याहवे के रूप में यह कहकर किया, "इसके पहले कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, **मैं हूं**"; और अपने इस बात से उनको चकित कर दिया।

यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु के अनेक वर्णन हैं जहां उनका परिचय इगो ऐमि - मैं हूं; के रूप में दिया गया।

- जीवन की रोटी **"मैं हूं"**। (**यूहन्ना 6:35**)
- जगत की ज्योति **"मैं हूं"**। (**यूहन्ना 8:12**)
- इसके पहले कि अब्राहम उत्पन्न हुआ **"मैं हूं"**। (**यूहन्ना 8:58**)
- भेड़ों का द्वार **"मैं हूं"**। (**यूहन्ना 10:7**)
- अच्छा चरवाहा **"मैं हूं"**। (**यूहन्ना 10:11**)
- पुनरूत्थान और जीवन **"मैं ही हूं"**। (**यूहन्ना 11:25**)
- मार्ग, सच्चाई और जीवन **"मैं ही हूं"**। (**यूहन्ना 14:6**)
- सच्ची दाखलता **"मैं हूं"**। (**यूहन्ना 15:1**)

**ये सभी रूप हमें याद दिलाते हैं कि जब आप इगो ऐमि से प्रार्थना कर रहे हैं तो आप महान "मैं हूं" से प्रार्थना कर रहे हैं, जो सक्षम और पूर्ण है, जो हर समय उपस्थित रहता है और जो सर्व शक्तिमान है।**

**विचार और प्रार्थना करने के लिये प्रश्न:**

१. आपने **"इगो ऐमि" - मैं हूं** की उपस्थिती को अपने जीवन में कैसे अनुभव किया है?

२. यीशु आपके जीवन में उपस्थित हैं यह जानकारी आपके जीवन की आज की परिस्थितियों में कैसे मददगार साबित होगा?